जन्मजात प्रत्यय का खंडन

बुद्धिवादियों की मान्यता है कि कुछ प्रत्यय जन्मजात होते हैं| जॉन लॉक ने बुद्धिवादियों की इस मान्यता का खंडन किया| उन्होंने कहा कि हमारे अंदर कोई ऐसे जन्मजात प्रत्यय नहीं है| हमारी आत्मा में कोई जन्मजात प्रत्यय नहीं है| हमारे समस्त ज्ञान की जननी केवल इंद्रियां अनुभूति ही है| हमारे ज्ञान का आदि और अंत इंद्रिया अनुभव से होता है| हमारा सारा ज्ञान इंद्रियां अनुभव प्रस्तुत है|

जॉन लॉक ने सर्वप्रथम अपने अनुभववादी दर्शन की प्रतिष्ठा के लिए बुद्धिवादियों के जन्मजात प्रत्यय सिद्धांत का खंडन किया| उनके अनुसार हमारा कोई भी ज्ञान सहज नहीं है, जन्मजात नहीं है| हम किसी भी प्रकार का ज्ञान जन्म के साथ नहीं लाते| सारा ज्ञान इंद्री अनुभव से आता है| जब लोग किसी वस्तु को अनुभव से सिद्ध नहीं कर सकते तो उसे जन्मजात कह कर निश्चिंत हो जाते हैं| यह मार्ग सत्य की खोज से भागने का मार्क है| यह अंधविश्वास और रूढ़िवाद का मार्क है|

बुद्धिवादियों अथवा जन्मजात प्रत्यय के समर्थकों के अनुसार आत्मा अपने स्वत: सिद्ध प्रत्ययों के साथ ही संसार में आती है| तादात्म्य नियम, विरोध नियम, आदि अनिवार्य और सार्वभौम नियम जन्मजात हैं इनका ज्ञान इंद्रिय अनुभव पर निर्भर नहीं है| देकार्त के अनुसार आत्मा और ईश्वर की प्रतीति भी सहज ज्ञान द्वारा होती है| जॉन लॉक की आपत्ति है कि यदि सहज प्रत्यय या जन्मजात प्रत्यय हो तो उनकी प्रतीति बालकों, मूर्खों और पागलों को भी होनी चाहिए और उनके विषय में सभी देशों और सब समय में मानवों में एक मतैक्य होनी चाहिए| परंतु ऐसा नहीं होता| बालकों, मूर्खों और पागलों को ज्ञान के सार्वभौम नियमों का कोई बोध नहीं होता| बच्चे जानते हैं कि गुड़िया और दूध पीने का गिलास एक ही वस्तु नहीं है, किंतु यह कथन की बच्चों का यह ज्ञान उनके तादात्म्य नियम और विरोध नियम के ज्ञान के कारण है हास्यास्पद है| कुछ मूर्ख ऐसे भी हैं जो 10 तक गिनती भी नहीं जानते| कुछ पागल ऐसे भी हैं जिनको अपनी आत्मा का भी अनुभव नहीं होता| यदि ईश्वर का ज्ञान भी जन्मजात हो, तो फिर संसार में नास्तिक नहीं होने चाहिए| किंतु विश्व में नास्तिकों की कमी नहीं है| और ईश्वर के स्वरूप को लेकर दार्शनिकों में जितना विवाद हुआ है तथा धर्मांध लोगों में जितना रक्त बात हुआ है, यह सबको पता है| आचार संबंधी एक भी ऐसा सिद्धांत नहीं है जो सब देशों और सब युगों के लोगों को समान रूप से मान्य रहा हो| आचार संबंधी सिद्धांतों को युक्तियों से सिद्ध करने का अर्थ यही है किए आंतरिक या जन्मजात नहीं है| यदि बुद्धिवादी यह कहते हैं कि यह विचार बुद्धि में विद्यमान तो रहते हैं, किंतु प्रकट रूप में नहीं आते, तो यह संगत है| बुद्धि में विद्यमान रहने का अर्थ है ज्ञात होना| बुद्धि में कोई विचार रहे और उसका ज्ञान ना हो यह असंभव है| कोई प्रत्यय अचेतन नहीं हो सकता| कोई विचार ऐसा नहीं है जिसे जन्मजात कहा जा सकता|

इस तरह जॉन लॉक इन जन्मजात प्रतियों के खंडन में कई तर्क प्रस्तुत करते हैं| इस विषय में लॉक का विचार क्रांतिकारी है| उनका यह मत अनुभववाद के समर्थन में प्रसिद्ध है - " हमारे मन (बुद्धि) में ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जो पहले इंद्रियों में नहीं थी|" लॉक ने यह कह कर सिद्ध करने का प्रयास किया है कि ज्ञान केवल इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होता है|